

आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज निकीता लंबुगोळ

के.एल.ई. जी. आय. बागेवाडी महाविद्यालय, निपाणी, बेलगावी।

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.17263825>

ABSTRACT:

यह आलेख आधुनिक हिंदी साहित्य और भारतीय समाज के बीच अटूट संबंध का विश्लेषण करता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से विकसित यह साहित्य, अंग्रेजी शासन, राष्ट्रीय चेतना के उदय और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आए सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बदलावों का प्रतिबिंब रहा है। भारतेंदु युग से लेकर समकालीन साहित्य तक, इसने सामाजिक जागरण और सुधार का कार्य किया, जिसमें राष्ट्रवाद, यथार्थवाद (प्रेमचंद), और मानवतावाद को प्रमुखता मिली। साहित्य ने दहेज प्रथा और जातिवाद जैसी सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया। इसमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, और पर्यावरण विमर्श जैसे नए विमर्शों का उदय हुआ। आधुनिक हिंदी साहित्य समाज को एक स्वस्थ और मानवतावादी दृष्टिकोण प्रदान करता रहा है, जो आज भी भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

KEYWORDS:

आधुनिक हिंदी साहित्य, सामाजिक जागरण, राष्ट्रवाद, यथार्थवाद, विमर्श.

.....

आधुनिक हिंदी साहित्य ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय बदलावों को प्रतिबिंबित किया है, जहाँ साहित्य समाज को स्वस्थ और मानवतावादी दृष्टिकोण प्रदान कर रहा है। आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ। इस समय भारतीय समाज अनेक बदलावों से गुजर रहा था - एक ओर अंग्रेजी शासन का प्रभाव था तो दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना का उदय हो रहा था। शिक्षा का प्रसार, आंदोलन की लहर और स्वतंत्रता संग्राम ने

साहित्य को नई दिशा दी। इस काल में राष्ट्रीयता की भावना बढ़ी है, भारतीय समाज के सुधारों को व्यक्त किया गया है, और विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे कि उपन्यास, कहानी, निबंध और नाटक का विकास हुआ है, जिससे साहित्य का क्षेत्र विस्तृत हुआ है। आधुनिक हिंदी साहित्य समाज के लिए एक दर्पण का कार्य करता है, जो समाज में व्याप्त समस्याओं और सुधार के प्रयासों को सामने लाता है, और समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल भारतीय समाज में आए राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का प्रतिबिंब है। अंग्रेजों के शासन, भारतीय पुनर्जागरण, स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद के राष्ट्र निर्माण काल ने न केवल भारतीय समाज को बदल दिया बल्कि हिंदी साहित्य को भी एक नई दिशा और दृष्टिकोण प्रदान किया।

आधुनिक हिंदी साहित्य का समाज से संबंध

समाज का प्रतिबिंब: आधुनिक हिंदी साहित्य, सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों के साथ-साथ, औद्योगीकरण, पाश्चात्य शिक्षा और आवागमन के साधनों के विकास के फलस्वरूप हुए सामाजिक बदलावों को दर्शाता है।

सामाजिक जागरण और सुधार: इस काल के साहित्य ने भारतीय समाज में स्वदेशी व समाज सुधार की भावना को बढ़ावा दिया। लेखकों ने समाज की खामियों को उजागर किया और उनके समाधान प्रस्तुत किए।

राष्ट्रीय चेतना का विकास: स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना का साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे साहित्य में राष्ट्रवादी विषयों को बल मिला।

मानवतावाद का उदय: ईश्वर के महत्व के साथ-साथ मानव को प्राथमिकता दी जाने लगी, और साहित्य मानवतावादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने लगा।

आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ:

भारतीय पुनर्जागरण की झलक: भारतेंदु हरिश्चंद्र ने साहित्य को जागरण का माध्यम बनाया। उनके नाटकों और कविताओं में सामाजिक

चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

राष्ट्रवाद का स्वर: मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी आदि कवियों ने स्वतंत्रता आंदोलन को स्वर दिया।

प्रगतिवाद और यथार्थवाद: प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों में किसानों, मजदूरों और आम जनता के जीवन संघर्ष को चित्रित किया है। यह साहित्य समाज की समस्याओं को सीधे सामने लाने वाला था।

साहित्यिक विधाओं का विकास: काव्य के साथ-साथ गद्य का भी पर्याप्त विकास हुआ, जिसमें डायरी, आत्मकथा, नाटक, यात्रा विवरण, पटकथा लेखन आदि नई विधाएँ उभरीं।

नए साहित्यिक युग: काव्य में छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी और यथार्थवादी युग आए, जबकि गद्य में भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, प्रेमचंद युग और अद्यतन युग का विकास हुआ।

अनुवाद का विकास: संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य का हिंदी में अनुवाद हुआ, जिससे हिंदी साहित्यकारों को समृद्ध परंपराओं से जुड़ने और नए दृष्टिकोण अपनाने का अवसर मिला।

विमर्श का उदय: समकालीन साहित्य में दलित विमर्श, नारी विमर्श, वृद्ध विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, पर्यावरण विमर्श जैसे विषयों को भी साहित्य में स्थान मिला।

स्त्री विमर्श और सशक्तिकरण: आधुनिक हिंदी साहित्य में महिलाओं के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया गया। महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती और उषा प्रियंवदा जैसी लेखिकाओं ने महिलाओं की पीड़ा, उनके संघर्ष और सशक्तिकरण को अपनी रचनाओं का विषय बनाया।

समसामयिक समस्याओं का चित्रण: आजादी के बाद के हिंदी साहित्य में विभाजन, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शहरीकरण और उपभोक्तावाद जैसी नई समस्याओं को दर्शाया गया। व्यंग्य और हास्य के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों पर कटाक्ष किया गया।

सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार: दहेज प्रथा, बाल विवाह, स्त्रियों की दशा, जातिवाद जैसी समस्याओं पर साहित्य ने तीखा प्रहार किया।

यह साहित्य समाज सुधारक की भूमिका में आया।

प्रमुख लेखक और उनका योगदान:

प्रेमचंद: ग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमता और शोषण के यथार्थ चित्रण में अग्रणी। उनके उपन्यास 'गोदान', 'गबन', 'सेवासदन' आदि आज भी प्रासंगिक हैं।

जयशंकर प्रसाद: ऐतिहासिक चेतना और भावुकता से ओत-प्रोत काव्य और नाटक। 'कामायनी' उनकी अमर रचना है।

महादेवी वर्मा: नारी संवेदना की सशक्त कवयित्री। छायावादी युग की प्रतिनिधि। उनका गद्य साहित्य भी अत्यंत विचारोत्तेजक है।

हरिवंश राय बच्चन: उन्होंने काव्य में आम व्यक्ति की भावनाओं को जगह दी। 'मधुशाला' जैसी रचना लोकप्रिय हुई।

निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव जैसे लेखकों ने नई कहानी आंदोलन को दिशा दी और बदलते समाज को गहराई से चित्रित किया।

समाज पर साहित्य का प्रभाव:

सामाजिक चेतना का विकास: आधुनिक हिंदी साहित्य ने लोगों में सामाजिक समस्याओं को लेकर जागरूकता उत्पन्न की।

राजनीतिक विचारों को बल: स्वतंत्रता आंदोलन और लोकतंत्र के विकास में साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सांस्कृतिक एकता: हिंदी साहित्य ने भारत की विविधता में एकता की भावनाओं को प्रोत्साहित किया।

शिक्षा और भाषा का विकास: आधुनिक साहित्य ने शिक्षा के प्रचार और हिंदी भाषा को जनमानस की भाषा बनाने में सहायता की।

निष्कर्ष:

आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज का रिश्ता अटूट है। आधुनिक हिंदी साहित्य समाज के विकास का साक्षी रहा है और इसने समाज के नवनिर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह समाज की

बदलती परिस्थितियों को व्यक्त करता है और उसे एक नई दिशा प्रदान करता है। आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। समाज ने साहित्य को विषय और प्रेरणा दी, वहीं साहित्य ने समाज को दिशा और चेतना प्रदान की। आज भी हिंदी साहित्य सामाजिक बदलाव का माध्यम बना हुआ है और मानवीय संवेदनाओं को स्वर दे रहा है। आज भी हिंदी साहित्य समकालीन चुनौतियाँ जैसे वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और सांस्कृतिक बदलाव को अभिव्यक्त कर रहा है। भले ही नई पीढ़ी के सामने अंग्रेजी और सोशल मीडिया जैसी नई चुनौतियाँ हैं, फिर भी हिंदी साहित्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. दृष्टि आईएस: मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय साहित्य

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.